'फूलाबाई' का दर्द: मुहब्बत कहानी की करुण गाथा

डॉ. पी. एम. भुमरे
सहायक प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष, श्री. मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,
शंकरनगर, तह.- बिलोली, जि.- नांदेड

शोधसार -

'मुहब्बत' कहानी के लेखक जगदंबा प्रसाद दीक्षित हैं। फूलाबाई के जीवन पर लिखी उनकी यह कहानी गरीबी, भूख की समस्या और देह-व्यापार करने वालों के प्रति सामाजिक सोच को उजागर करती है। साथ ही, फूलाबाई के जीवन-संघर्ष, सामाजिक उपेक्षा और तिरस्कार का चित्रण करते हुए यह दिखाया गया है कि फूलाबाई केवल अपनी पहचान के कारण भेदभाव का सामना करती है। फूलाबाई को समाज में समान दृष्टि से नहीं देखा जाता, जिससे उसके मन में पीड़ा, अकेलेपन और उपेक्षा की भावना जन्म लेती है। इसके बावजूद वह अपने भीतर प्रेम, करुणा और मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखती है। कहानी की मुख्य पात्र फूलाबाई, जो पचपन साल की है, एक गरीब और बेसहारा स्त्री है। फूलाबाई गरीबी से बेबस है। जहां वह काम करती है, वहां मालिकों द्वारा उसका शोषण होता है तथा मजबूरन उसे वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है। फूलाबाई आर्थिक तंगी का सामना करते हुए इस दलदल से बाहर निकलने की कोशिश भी करती है और अपना घर बसाना चाहती है। परंतु उसे किसी का भी साथ नहीं मिलता; अर्थात उसे सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती। इस कारण वह अकेलेपन तथा मानसिक और शारीरिक पीड़ाओं को झेलते हुए अस्पताल में मर जाती है।

बीज शब्द - फूलाबाई के जीवन की त्रासदी, सामाजिक भेदभाव, शोषण, आर्थिक तंगी की समस्या, पहचान का संघर्ष, फूलाबाई की व्यथा, सामाजिक स्थिति, 'मुहब्बत', फूलाबाई की उपेक्षा, बेसहारा स्त्री।

प्रस्तावना -

हिंदी साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम भी है। समय के साथ साहित्य में अनेक विमर्शों का उद्भव हुआ, जिनमें स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श, किसान-विमर्श, पर्यावरण-विमर्श तथा किन्नर-विमर्श विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन विमर्शों का मूल उद्देश्य उन वर्गों की पीड़ा, संघर्ष, अस्मिता और अधिकारों को अभिव्यक्ति देना है, जिन्हें लंबे समय तक मुख्यधारा के समाज और साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिल सका। भारतीय स्त्री समुदाय समाज का एक प्राचीन किंतु उपेक्षित वर्ग रहा है। पौराणिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं में उनकी उपस्थिति के बावजूद आधुनिक समाज में उन्हें सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव और उपेक्षा का सामना करना पड़ा है। समकालीन हिंदी साहित्य में इस समुदाय के जीवन, संघर्ष, संवेदनाओं, पहचान और मानवीय गरिमा को केंद्र में रखकर उसके अस्तित्व और अधिकारों को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। स्त्री-विमर्श केवल लैंगिक विविधता का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, मानवीय अधिकार और गरिमापूर्ण जीवन की स्थापना का भी विमर्श है। इस दृष्टि से हिंदी की कहानी-विधा सशक्त रूप से अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। इस सदी की कहानियाँ स्त्रियों की समस्याओं और संवेदनाओं को कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रही हैं। इस दृष्टि से जगदंबा प्रसाद दीक्षित द्वारा लिखित 'मुहब्बत' कहानी स्त्रियों की समस्याओं तथा भावनाओं का यथार्थ प्रस्तुत करती है।

'मुहब्बत' कहानी के लेखक जगदंबा प्रसाद दीक्षित हैं। उनकी इस प्रसिद्ध कहानी में फूलाबाई के दर्द का भावनात्मक वर्णन किया गया है। जगदंबा प्रसाद दीक्षित साहित्यकार, पटकथा-लेखक तथा प्रसिद्ध उपन्यासकार

के रूप में पहचाने जाते हैं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के बालाघाट कस्बे में 1913 में हुआ था। उनकी प्रमुख कृतियों में 'मुर्दाघर' और 'कटा हुआ आसमान' प्रसिद्ध उपन्यास हैं तथा 'शुरुआत' उनका प्रसिद्ध कहानी-संग्रह है। राजनीति के संदर्भ में उन्होंने कई लेख लिखे हैं। साथ ही, 'कागज के आदमी' और 'मक्खी' नामक नाटक भी उन्होंने लिखे हैं। विशेष रूप से सिनेमा में पटकथा-लेखन के लिए भी उनके नाम का जिक्र किया जाता है। 'जिसमें फिर तेरी याद आई', 'कलयुग' और 'नाजायज' जैसी फिल्मों के लिए उन्होंने लेखन-कार्य भी किया है। ऐसे प्रसिद्ध साहित्यकार जगदंबा प्रसाद दीक्षित की मृत्यु 22 मई 2014 को जर्मनी के बर्लिन शहर में हुई। उनके द्वारा लिखित 'मुहब्बत' कहानी एक स्त्री के दर्द को बयान करती है। प्रत्येक स्त्री के सपने होते हैं और कभी-कभी उसका यही सपना उसके जीवन का दर्द बन जाता है। अतः यह कहानी स्त्रियों के जीवन की त्रासदी को निम्न रूप में अभिव्यक्त करती है।

जगदंबा प्रसाद दीक्षित की कहानी 'मुहब्बत' में समाज और मानव जीवन की विविधता प्रस्तुत की गई है, जिसमें स्त्रियों की अभिव्यक्ति विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि यह पात्र कहानी के भाव और सामाजिक संदेश को गहराई देता है। कहानी का प्रमुख पात्र फूलाबाई है, जिसकी उम्र पचपन साल है। उसकी भावनाएँ, इच्छाएँ, सपने और जीवन जीने की आकांक्षाएँ अन्य सभी लोगों के समान हैं। फिर भी सामाजिक उपेक्षा, भेदभाव और अस्वीकार के कारण उसे अनेक भावनात्मक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे, "यहीं मैंने फुलाबाई को देखा था पचपन या साठ साल की थकी हुई काली औरत। बालों में बदरंग खिजाब लगाया था। बालों की जड़े सफेद हो रही थी। कई जगह सफेद बाल छूट भी गए थे । आते - जाते एक बार उसने मुझे गौर से देखा था"।[1] अधिकांश लोग बचपन से ही अपनी पहचान को लेकर संघर्ष करते हैं। कई बार उन्हें परिवार और समाज में स्वीकार नहीं किया जाता, जिससे वे अकेलेपन, असुरक्षा और हीन भावना का अनुभव करती हैं। उपेक्षा, तिरस्कार और भेदभाव उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं। शिक्षा और रोजगार के सीमित अवसर भी उनके मानसिक तनाव को बढ़ाते हैं। गरीबी के कारण जो भी सहायता मिलती है, उस पर वे टूट पड़ती हैं। जैसे, "औरतें कल बीमार बच्चे दिखाई थी ऊपर से नोट फेंकते थे, डबल इंसान उन पर टूट पड़ते थे । नोटों को लेकर लड़ाइयां होती थी लेकिन फिर और मांगते थे"।[2] वे चाहती हैं कि समाज उन्हें दया या उपहास की दृष्टि से नहीं, बल्कि समान अधिकार वाले नागरिक के रूप में स्वीकार करे। परिवार का सहयोग, मित्रों का साथ और समाज का सम्मान उनके आत्मविश्वास तथा मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाता है। जब उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है, तो वे शिक्षा, कला, खेल, प्रशासन और अन्य क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

फूलाबाई का जीवन निरंतर संघर्षों से भरा हुआ है। उसे सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक अभाव और भावनात्मक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। प्रेम और विश्वास के बदले उसे निराशा और अकेलापन मिलता है। समाज की रूढ़ियाँ और पुरुष-प्रधान व्यवस्था उसके जीवन को और अधिक कठिन बना देती हैं। वह अपने दुखों को चुपचाप सहती रहती है, किंतु उसके भीतर की पीड़ा कभी समाप्त नहीं होती। स्त्रियों का भावनात्मक संसार भी अन्य मनुष्यों की तरह आशाओं, सपनों और आत्मसम्मान से भरा होता है। यदि उन्हें प्रेम, सम्मान और समान अवसर मिलें, तो वे भी समाज और राष्ट्र की उन्नति में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह दुर्बल और शोषित स्त्रियों के प्रति सहानुभूति, संवेदनशीलता तथा समानतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाए। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक जीवन में समान अवसर प्रदान करके अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है।

सृष्टि के निर्माण में स्त्रियों का जिस प्रकार योगदान है, उसी प्रकार स्त्री भारतीय समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग भी है। प्राचीन काल से ही उनका उल्लेख हमारे इतिहास, धर्म और संस्कृति में मिलता है। इसके बावजूद लंबे समय तक उन्हें समाज में सम्मान और अवसर नहीं मिल सके। आज शिक्षा, जागरूकता और कानून में हुए बदलावों के

कारण उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण धीरे-धीरे सकारात्मक हो रहा है। फिर भी अनेक चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में भी स्त्रियों के प्रति भेदभावपूर्ण नजरिया रहा है। कई वर्षों तक सामाजिक व्यवस्था ने स्त्रियों को घर तक ही सीमित रखा। साथ ही, उन्हें जो भी काम दिया जाता था, वहां उनका आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता था। जैसे, "मसाज पार्लर में बहुत काम करवाते थे। रात को काम होता था, दिन में भी काम होता था। बंद कमरों के अंदर से लगातार फुला की पुकार होती रहती थी। कभी यह पहुंचाओ... कभी वह पहुंचाओ। शराब, बर्फ, सोड़ा, सिगरेट! बीच-बीच में लंबी चुप्पियां छा जाती थी। खाना भी पकाना पड़ता था। फुला को बहुत गालियां देती थी। नशे में कभी-कभी मारना शुरू कर देती थी।"[3] सामाजिक स्थिति के कारण स्त्रियों को अक्सर परिवार और समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कई बार उन्हें बचपन से ही उपेक्षा, तिरस्कार और अस्वीकार का अनुभव होता है। शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं तक उनकी पहुंच सीमित रह जाती है। इसी कारण अनेक स्त्रियों को जीविका के लिए पारंपरिक कार्यों पर निर्भर रहना पड़ा है।

स्त्रियों में आपसी सहयोग, भाईचारे और अपनत्व की भावना विशेष रूप से दिखाई देती है। वे अपने समुदाय के सदस्यों का साथ देती हैं और कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे का सहारा बनती हैं। स्त्रियों की दृष्टि उदार होती है। वे बड़ी प्रसन्नता से छोटे-बड़ों को आशीष देती हैं। कहानी की फूलाबाई स्वयं भूखी रहकर भी दूसरों को खाना खिलाती है। जैसे, "सुबू को प्लेट ले जाऊंगी। ऐसा खाली पेट नहीं सोने का? मुझे ताज्जुब हुआ था। उसको किसने बताया कि, शाम मुझे खाना नहीं मिला था। इसके बाद कई बार ऐसा होने लगा"।[4] सामाजिक उपेक्षा और भेदभाव का अनुभव करने के कारण फूलाबाई दूसरों के दुख और पीड़ा को गहराई से समझती है। वह मानवीय संवेदनाओं का सम्मान करती है और अनेक अवसरों पर जरूरतमंद लोगों की सहायता भी करती है। उसका जीवन हमें यह संदेश देता है कि संवेदनशीलता, करुणा और सहानुभूति किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं होती, बल्कि ये प्रत्येक मनुष्य के गुण हैं। जगदंबा प्रसाद दीक्षित की कहानी 'मुहब्बत' ऐसी ही एक मार्मिक कहानी है, जिसमें स्त्री के जीवन, संघर्ष, प्रेम और मानवीय भावनाओं का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है। फूलाबाई का संपूर्ण जीवन सेवा-कार्य से जुड़ा रहा है। जैसे, "दम लेने की फुरसत भी नहीं मिलती थी। दुकानों से सामान ले - ले कर अंदर पहुंचाती थी। होटल से चाय, दुकान से पान-सिगरेट वगैरह"।[5] यह कहानी समाज में प्रचलित उस पूर्वाग्रह पर प्रश्न उठाती है कि स्त्रियाँ अधिक काम नहीं कर सकतीं। यह संदेश भी देती है कि दुर्बल और बेसहारा फूलाबाई भी अन्य मनुष्यों की तरह भावनाओं से परिपूर्ण है।

लेखक ने दिखाया है कि गरीब और बेसहारा स्त्री के हृदय में भी प्रेम, ममता, करुणा, आत्मसम्मान और अपनत्व की गहरी भावनाएँ होती हैं। वे भी सम्मानपूर्वक जीवन जीना चाहती हैं और समाज से स्वीकार्यता की अपेक्षा रखती हैं। उनके मन में किसी के प्रति प्रेम और स्नेह उतना ही स्वाभाविक है, जितना किसी अन्य व्यक्ति के मन में होता है। सामाजिक उपेक्षा और पीड़ा कहानी का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। समाज स्त्रियों को अक्सर उनकी लैंगिक पहचान के आधार पर आंकता है। उन्हें उपहास, तिरस्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। परिवार और समाज द्वारा अस्वीकार किए जाने के कारण उनके मन में अकेलेपन और असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है। कहानी में स्त्रियों को समाज द्वारा सम्मान और समान अधिकारों से वंचित दिखाया गया है। उन्हें अक्सर उपहास, तिरस्कार और अस्वीकार का सामना करना पड़ता है। जैसे, "मैं तो अकेली। मैं तो तुमकू... बोले तो.. मुहब्बत करती। और भी जास्ती मुहब्बत करूंगी। क्यों तो इस वास्ते कि, मेरे कू भी मुहब्बत मंगता थोड़ा हेलप मंगता"।[6] फूलाबाई जीवन के इस दलदल से बाहर निकलना चाहती है। उसे किसी की सहायता की आवश्यकता है, परंतु समय पर मदद न मिलने से उसका दर्दनाक अंत हो जाता है। समाज उसे मुख्यधारा से अलग कर देता है, जिसके कारण वह शिक्षा, रोजगार और जीवन के अवसरों से दूर रह जाती है। यही सामाजिक उपेक्षा उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाती है।

लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्रियों के भीतर भी प्रेम, आत्मसम्मान, अपनापन और रिश्तों की इच्छा होती है। किंतु समाज उनकी भावनाओं को समझने के बजाय उन्हें केवल उनकी लैंगिक पहचान से आंकता है। इस कारण उन्हें गहरे मानसिक और भावनात्मक कष्ट का सामना करना पड़ता है। उनका अकेलापन और अस्वीकार का दर्द कहानी को अत्यंत मार्मिक बना देता है। 'मुहब्बत' में स्त्रियों का जीवन निरंतर संघर्ष का प्रतीक है। वे अपनी पहचान के साथ सम्मानपूर्वक जीना चाहती हैं, लेकिन समाज की संकीर्ण सोच उनके मार्ग में बाधा बनती है।

कहानी केवल फूलाबाई की पीड़ा का वर्णन नहीं करती, बल्कि समाज को आत्मचिंतन का संदेश भी देती है। लेखक यह बताना चाहते हैं कि हर मनुष्य सम्मान, प्रेम और समान अवसर का अधिकारी है। फूलाबाई घर बसाना चाहती है और घुटन तथा मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं से मुक्त होना चाहती है। जैसे, "ऐसा क्या करते। चलो ना, अपुन चलेगा.. किधर भी! अपुन मोहब्बत करेगा। सच्ची मैं तुमको भोत मुहबत करती..। ऐसा क्या करते। चलो ना अभी"।[7] आर्थिक दृष्टि से कमजोर स्त्रियों के प्रति सहानुभूति नहीं रही है। परिस्थितियाँ थोड़ी बदली हैं, फिर भी फूलाबाई जैसी दुर्बल स्त्रियों का शोषण हो रहा है। उनके प्रति दया और स्नेहयुक्त व्यवहार ही उन्हें त्रासदी से मुक्त करा सकता है। यदि समाज स्त्रियों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण रखे, तो उनकी अनेक समस्याओं का समाधान संभव है।

निष्कर्ष -

'मुहब्बत' कहानी में फूलाबाई की व्यथा यह दर्शाती है कि समाज की सीमाएँ और भेदभाव कभी-कभी मानवीय प्रेम और संवेदनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त होने से रोकते हैं। 'मुहब्बत' कहानी की फूलाबाई के पात्र के माध्यम से कहानीकार ने असहायता, बेबसी, मालिक द्वारा शोषण, आर्थिक तंगी की समस्या, प्रेम के लिए फूलाबाई की बेचैनी तथा देह-व्यापार के दलदल से बाहर निकलने की छटपटाहट को व्यक्त किया है। फूलाबाई का व्यक्तित्व और उसकी व्यथा पाठक को सहानुभूति तथा संवेदनशील दृष्टि विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं। कहानी यह संदेश भी देती है कि भावनाएँ और प्रेम सार्वभौमिक हैं। सामाजिक भेदभाव या लैंगिक सीमाएँ प्रेम और संवेदनाओं को कम नहीं कर सकतीं। 'मुहब्बत' कहानी फूलाबाई के जीवन की त्रासदी का अत्यंत सजीव, यथार्थ और हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करती है। यह कहानी पाठकों को यह समझाती है कि फूलाबाई जैसी प्रेमिका की वास्तविक समस्या उसकी पहचान नहीं, बल्कि सामाजिक भेदभाव और उपेक्षा है। प्रेम, समानता और मानवीय संवेदना ही इस त्रासदी को कम करने का सबसे प्रभावी मार्ग है। इस प्रकार 'मुहब्बत' कहानी फूलाबाई के जीवन की त्रासदी के साथ-साथ मानवीय भावनाओं, संवेदनाओं और प्रेम की गहराई को उजागर करती है।

संदर्भ सूची -

1. स्वयं प्रकाश (सं.), श्रेष्ठ हिंदी कहानी: 1970–1980, रचनाकार- जगदंबा प्रसाद दीक्षित, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड, पृ. 40।
2. वही, पृ. 40।
3. वही, पृ. 40।
4. वही, पृ. 41।
5. वही, पृ. 41।
6. वही, पृ. 42।
7. वही, पृ. 42।